B. A-2

Short Notes on Raga - Marwa.

- इस राग को मारवा थाट जन्य माना गया है।
- इसकी जाति षाडव - षाडव है।
- इस राग का वादी स्वर कोमल 'रे' और संवादी 'ध' है।
- दिन के अंतिम प्रहर में इसे गाया बजाया जाता है।
- यह मारवा थाट का आश्रय राग है।
- मारवा थाट में पंचम वर्ज्य नहीं है परन्तु मारवा राग में पंचम वर्ज्य है।
- यह अन्य रागों की तुलना में यह शुद्ध और पंचम प्रकृति का राग है।
- इसे गाते समय तानपूरे का प्रथम तार मन्द्र निषाद से मिलाया जाता है, क्योंकि इसमें शुद्ध म और प दोनों वर्ज्य है।
- समप्रकृति राग पूरिया है।
- वादी स्वर ऋषभ का महत्व स्थिर करने के लिए षड्ज का प्रयोग कम होता है। प्रचलित रागों में यही एक ऐसा राग है, जिसमें षड्ज का महत्व कम है।